।। तत्त्वबोध ।।

मंगलाचरण

वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं गुरुम् ।
मुमुक्षूणां हितार्थाय तत्त्वबोधोऽभिधीयते ।।

हम ज्ञानप्रदाता वासुदेवेन्द्र, योगियों में श्रेष्ठ गुरु को नमस्कार करके मुमुक्षुओं के हित के लिए तत्त्वबोध बता रहे हैं।

1. अधिकारी

साधनचतुष्टयसम्पन्नाधिकारिणां मोक्षसाधनभूतं तत्त्वविवेक प्रकारं वक्ष्यामः।

साधन चतुष्ट्य सम्पत्ति से युक्त अधिकारी के लिए मोक्ष के साधनरूप तत्त्वविवेक का प्रकार बताने जा रहे हैं।

1. साधनचतुष्टयं किम् ?

चार साधन कौन से है ?

नित्यानित्यवस्तुविवेकः। इहामुत्रार्थफलभोगविरागः। शमादि षट्कसम्पत्तिः मुमुक्षुत्वं चेति।

नित्य–अनित्य वस्तुविवेक, इस और परलोक के भोग से वैराग्य, शमादि छह सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व है।

1.1 नित्यानित्यवस्तुविवेकः कः ?

नित्यानित्य वस्तुविवेक किसे कहते है ?

नित्यवस्त्वेकं ब्रह्म तद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यम्। अयमेव नित्यानित्यवस्तुविवेकः।

नित्य वस्तु एक ब्रह्म है, उससे भिन्न सब अनित्य है। यह ही नित्यानित्य वस्तुविवेक है।

1.2 विरागः कः ?

विराग किसे कहते हैं ?

इहस्वर्गभोगेषु इच्छाराहित्यम्।

इस लोक और स्वर्गलोक के भोग के प्रति इच्छा के अभाव को विराग कहते है।

1.3 शमादिसाधनसम्पत्तिः का ?

शमादि छह सम्पत्ति क्या है ?

शमो दम उपरमस्तितिक्षा श्रद्धा समाधानं चेति।

शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।

1.3.1 शमः कः ? मनोनिग्रहः।

शम किसे कहते है ? मन का निग्रह।

1.3.2 दमः कः ? चक्षुरादिबाह्येन्द्रियनिग्रहः।

दम किसे कहते है ? चक्षु आदि बाहरी इन्द्रियों का निग्रह।

1.3.3 उपरमः कः ? स्वधर्मानुष्ठानमेव।

उपरम किसे कहते है ? स्वधर्म के अनुष्ठान को ही उपरम कहते है।

1.3.4 तितिक्षा का ? शीतोष्णसुखदुःखादिसहिष्णुत्वम्।

तितिक्षा क्या है ? शीत–उष्ण, सुख–दुःख आदि के प्रति सहनशीलता।

1.3.5 श्रद्धा कीदृशी ? गुरुवेदान्तवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा।

श्रद्धा कैसी होती है ? गुरु और वेदान्त वाक्यों में विश्वास ही श्रद्धा है।

1.3.6 समाधानं किम् ? चित्तैकाग्रता।

समाधान किसे कहते है ? चित्त की एकाग्रता।

1.4 मुमुक्षुत्वं किम् ? 'मोक्षो मे भूयाद्' इति इच्छा।

मुमुक्षुत्व किसे कहते है ? हमें मोक्ष की प्राप्ति हो यह इच्छा।

एतत्साधनचतुष्टयम्। ततस्तत्त्वविवेकाधिकारिणो भवन्ति।

यह ही चार साधन है। इससे युक्त होने पर ही तत्त्वविवेक का अधिकारी होता है।

2. आत्मतत्त्वविवेक

2.1 तत्त्वविवेकः कः ?

तत्त्वविवेक किसे कहते है ?

आत्मा सत्यस्तदन्यत् सर्व मिथ्येति।

आत्मा सत्य है, उससे भिन्न सर्व मिथ्या है।

2.2 आत्मा कः ?

आत्मा किसे कहते है ?

स्थूलसूक्ष्मकारणशरीराद्व्यतिरिक्तः पंचकोशातीतः सन् अवस्थात्रयसाक्षी सच्चिदानन्दस्वरूपः सन् यस्तिष्ठति स आत्मा।

स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से जो पृथक् है, जो तीनों अवस्थाओं का साक्षी है, तथा जो सच्चिदानन्दस्वरूप है, वह आत्मा है।

2.3 स्थूलशरीरं किम् ?

स्थूलशरीर क्या है ?

पंचीकृतपंचमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादिभोगायतनं शरीरं, अस्ति जायते वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यतीति षड्विकारवदेतत्स्थूलशरीरम्।

जो पंचीकृत पांच महाभूतों से बना हुआ, पुण्यकर्म से प्राप्त, सुख–दुःखादि भोगों को भोगने का स्थान है, तथा जिसमें अस्तित्व, जन्म, वृद्धि, परिणाम, क्षय तथा विनाश रूपा षड्विकार होते है, वह स्थूलशरीर है।

2.4 सूक्ष्मशरीरं किम् ?

सूक्ष्मशरीर क्या है ?

अपंचीकृतपंचमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादिभोग साधनं पंचज्ञानेन्द्रियाणि पंचकर्मेन्द्रियाणि पंच प्राणादयः मनश्चैकं बुद्धिश्चैका एवं सप्तदशकलाभिः सह यस्तिष्ठति तत्सूक्ष्मशरीरम्।।

जो अपंचीकृत (सूक्ष्म) पांच महाभूतों से बना हुआ, सत्कर्म से प्राप्त, सुख–दुःखादि भोग का साधन है, जो पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच प्राणादि, मन और बुद्धि एवं सत्रह कलाओं से युक्त है, वह सूक्ष्मशरीर है।

2.5 श्रोत्रं त्वक् चक्षुः रसना घ्राणमिति पंच ज्ञानेन्द्रियाणि।।

श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना और घ्राण यह पांच ज्ञानेन्द्रियां है।

2.6 श्रोत्रस्य दिग्देवता। त्वचो वायुः। चक्षुषः सूर्यः। रसनायाः वरुणः। घ्राणस्य अश्विनौ इति ज्ञानेन्द्रियदेवताः।।

श्रोत्र के देवता दिशा हैं, त्वचा के वायु, चक्षु के सूर्य, रसना के वरुण और घ्राण के अश्विनीकुमार देवता हैं। इस प्रकार से सब के देवता हैं।

2.7 श्रोत्रस्य विषयः शब्दग्रहणम्। त्वचो विषयः स्पर्शग्रहणम् ।चक्षुषो विषयः रूपग्रहणम्। रसनाया विषयः रसग्रहणम्। घ्राणस्य विषयः गन्धग्रहणम् इति।

श्रोत्र का विषय शब्द को ग्रहण करना है, त्वचा का विषय स्पर्शग्रहण, चक्षु का विषय रूपग्रहण, रसना का विषय रसग्रहण और घ्राण का विषय गन्धग्रहण है।

2.8 वाक्पाणिपादपायूपस्थानीति पंचकर्मेन्द्रियाणि।

वाणी, हस्त, पाद, पायू और उपस्थ ये पांच कर्मेन्द्रियां है।

2.9 वाचो देवता वह्निः। हस्तयोरिन्द्रः। पादयोर्विष्णुः। पायोर्मृत्युः। उपस्थस्य प्रजापतिरिति कर्मेन्द्रियदेवताः।

वाणी के देवता अग्नि है, हस्त के इन्द्र, पाद के विष्णु, पायू के मृत्यु तथा उपस्थ के प्रजापति है। एवं ये कर्मेन्द्रियों के देवता है।

10 वाचो विषयः भाषणम्। पाण्योर्विषयः वस्तुग्रहणम्। पादयोर्विषयः गमनम्। पायोर्विषयः मलत्यागः। उपस्थस्य विषय आनन्दः इति।

वाणी का विषय बोलना है, हाथ का वस्तुग्रहण करना, पाद का गमन करना, पायू का मलत्याग तथा उपस्थ का विषय आनन्द है।

2.11 कारणशरीरं किम् ? कारणशरीर किसे कहते हैं ?

अनिर्वाच्यानाद्यविद्यारूपं शरीरद्वयस्य कारणमात्रं सत् स्वरूपाज्ञानं निर्विकल्पकरूपं यदस्ति तत्कारणशरीरम् ।

जो अनिर्वचनीय, अनादि, अविद्यारूप है, तथा शरीरद्वय का कारण है, जो सत्स्वरूपता के अज्ञानरूपता एवं निर्विकल्परूप है, वह कारणशरीर है।

2.12 अवस्थात्रयं किम् ?

तीन अवस्थाएं कौनसी है ?

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थाः ।

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था।

2.13 जाग्रदवस्था का ?

जाग्रत अवस्था किसे कहते हैं ?

श्रोत्रादिज्ञानेन्द्रियाणि शब्दादिविषयैश्च ज्ञायते इति यत्सा जाग्रदवस्था ।

श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रियां तथा शब्दादि विषयों के द्वारा जो जानी जाती है, वह जाग्रत अवस्था है।

स्थूलशरीराभिमानी आत्मा विश्व इत्युच्यते ।

स्थूलशरीर अभिमानी आत्मा को विश्व कहा जाता है।

2.14 स्वप्नावस्था केति चेत् ? जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतं तज्जनितवासनया निद्रासमये यः प्रपंचः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था ।

स्वप्न अवस्था किसे कहते हैं, ऐसा पूछने पर बताते हैं कि सोते समय जाग्रत अवस्था में जो देखा तथा सुना है, उससे जनित वासना के द्वारा निर्मित जो प्रपंच प्रतीत होता है, उसे स्वप्न अवस्था कहते हैं।

सूक्ष्मशरीराभिमानी आत्मा तैजसः इति उच्यते ।

सूक्ष्मशरीर का अभिमानी आत्मा तैजस कहा जाता है।

2.15 अतः सुषुप्त्यवस्था का ?

सुषुप्ति अवस्था किसे कहते हैं ?

अहं किमपि न जानामि सुखेन मया निद्राऽनुभूयत इति सुषुप्त्यवस्था ।

हमें कुछ नहीं पता है, हमने सुखपूर्वक निद्रा का अनुभव किया, यह सुषुप्ति अवस्था है।

कारणशरीराभिमानी आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते ।

कारणशरीर अभिमानी आत्मा प्राज्ञ कहलाती है।

2.16 पंचकोशाः के ? अन्नमयः प्राणमयः मनोमयः विज्ञानमयः आनन्दमयश्चेति ।

पंचकोश कौन कौन से हैं ? अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय।

2.17 अन्नमयः कः ? अन्नरसेनैव भूत्वा अन्नरसेनैव वृद्धिं प्राप्य अन्नरूपपृथिव्यां यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः स्थूलशरीरम् ।

अन्नमय किसे कहते हैं ? अन्नरस से बना हुआ, अन्नरस से ही वृद्धि को प्राप्त हुआ, अन्नरूप पृथ्वी में जो विलीन होता है, वह अन्नमय कोश, स्थूलशरीर है।

2.18 प्राणमयः कः ? प्राणाद्याः पंचवायवः वागादीन्द्रियपंचकं प्राणमयः कोशः ।

प्राणमय किसे कहते हैं ? प्राण आदि पांच वायु, वाणी आदि पांचकर्मेन्द्रियों का समूह प्राणमय कोश है।

2.19 मनोमयः कोशः कः ? मनश्च ज्ञानेन्द्रियपंचकं मिलित्वा भवति स मनोमयः कोशः ।

मनोमय कोश क्या है ? मन और पांच ज्ञानेन्द्रियों का समूह मिलकर जो बनता है, वह मनोमय कोश है।

2.20 विज्ञानमयः कः ? बुद्धिश्च ज्ञानेन्द्रियपंचकं मिलित्वा भवति स विज्ञानमयः कोशः ।

विज्ञानमय क्या है ? बुद्धि और पांच ज्ञानेन्द्रियां मिलकर जो बनता है, वो विज्ञानमय कोश है।

2.21 आनन्दमयः कः ? एवमेव कारणशरीरभूताविद्यास्थ मलिनसत्त्वं प्रियादिवृत्तिसहितं सत् आनन्दमयः कोशः ।

आनन्दमय किसे कहते हैं ? इस प्रकार से कारणशरीरभूत, अविद्या में स्थित, प्रियादि वृत्ति सहित मलिनसत्व आनन्दमय कोश है।

एतत्कोशपंचकम् ।

यह पांच कोश है।

2.22 मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः मदीयं मनश्च मदीया बुद्धिर्मदीयं ज्ञानमिति स्वेनैव ज्ञायते तद्यथा मदीयत्वेन ज्ञातं कटककुण्डलगृहादिकं स्वस्माद्भिन्नं तथा पंचकोशादिकं मदीयत्वेन ज्ञातमात्मा न भवति।

जैसे मेरे कंगन, कुण्डल, गृह आदि अपने से भिन्नरूप से जाने जाते हैं, ठीक उसी तरह मेरा शरीर, मेरे प्राण, मेरा मन और मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान इस प्रकार से जाने जाते हैं। अतः ये पांचकोश आदि 'मेरे' की तरह ज्ञात होने की वजह से आत्मा नहीं हैं।

2.23 आत्मा तर्हि कः? सच्चिदानन्द स्वरूपः।

तो फिर आत्मा क्या है? जो सच्चिदानन्द स्वरूप है।

2.24 सत्किम्? कालत्रयेऽपि तिष्ठतीति सत्।

सत् किसे कहते हैं? जो तीनों कालों में रहता है।

2.25 चित्किम्? ज्ञानस्वरूपः।

चित् क्या है? जो ज्ञानस्वरूप है।

2.26 आनन्दः कः? सुखस्वरूपः।

आनन्द क्या है? जो सुखस्वरूप है।

3. जगत की उत्पत्ति

3.1 अथ चतुर्विंशतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारं वक्ष्यामः।

अब चौबीस तत्व की उत्पत्ति का तरीका बताते हैं।

3.2 ब्रह्माश्रया सत्त्वरजस्तमोगुणात्मिका माया अस्ति।

ब्रह्म के आश्रित सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण रूप माया है।

3.3 ततः आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोस्तेजः। तेजस आपः। अद्भ्यः पृथिवी।

उसमें से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथिवी उत्पन्न हुए।

3.4 एतेषां पंचतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य सात्त्विकांशात् श्रोत्रेन्द्रियं सम्भूतम्।

इन पंचमहाभूत में से आकाश के सात्विक अंश से श्रोत्रेन्द्रिय उत्पन्न हुई।

वायोः सात्त्विकांशात्त्वगिन्द्रियं सम्भूतम्।

वायु के सात्विक अंश से त्वचा इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

अग्नेः सात्त्विकांशाच्चक्षुरिन्द्रियं सम्भूतम्।

अग्नि के सात्विक अंश से चक्षु इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

जलस्य सात्त्विकांशाद्रसनेन्द्रियं सम्भूतम्।

जल के सात्विक अंश से रसना इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

पृथिव्यां सात्त्विकांशात् घ्राणेन्द्रियं सम्भूतम्।

पृथ्वी के सात्विक अंश से घ्राण इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

3.5 एतेषां पंचतत्त्वानां समष्टिसात्त्विकांशान्मनो बुद्ध्यहंकारचित्तान्तःकरणानि सम्भूतानि।

इन पांचो तत्वों के सात्विक अंश से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूप अन्तःकरण उत्पन्न होता है।

संकल्पविकल्पात्मकं मनः।

मन संकल्पविकल्पात्मक होता है।

निश्चयात्मिका बुद्धिः।

बुद्धि निश्चयात्मिका होती है।

अहंकर्ता अहंकारः।

अहंकर्ता अहंकार होता है।

चिन्तनकर्तृ चित्तम्।

चिन्तनकर्ता चित्त होता है।

मनसो देवता चन्द्रमाः। बुद्धेर्ब्रह्मा। अहंकारस्य रुद्रः। चित्तस्य वासुदेवः।

मन के देवता चन्द्रमा हैं, बुद्धि के ब्रह्माजी, अहंकार के रुद्र और चित्त के वासुदेव हैं।

3.6 एतेषां पंचतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य राजसांशात् त्वगिन्द्रियं सम्भूतम्।
इन पांचो तत्वों में से आकाश के रजोगुण के अंश से वाक् इन्द्रिय उत्पन्न हुई।
वायोः राजसांशात् पाणीन्द्रियं सम्भूतम्।
वायु के रजोगुण के हस्तेन्द्रिय उत्पन्न हुई।
वह्नेः राजसांशात् पादेन्द्रियं सम्भूतम्।
अग्नि के रजोगुण के अंश से पादेन्द्रिय उत्पन्न हुई।
जलस्य राजसांशादुपस्थेन्द्रियं सम्भूतम्।
जल के रजोगुण के अंश से उपस्थ इन्द्रिय उत्पन्न हुई।
पृथिव्या राजसांशात् गुदेन्द्रियं सम्भूतम्।
पृथ्वी के रजोगुण के अंश से गुदा इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

3.7 एतेषां समष्टि राजसांशात्पंचप्राणाः सम्भूताः।
इन समष्टि के रजोगुण के अंश से पांच प्राण उत्पन्न हुए।

3.8 पंचीकरणं कथम् इति चेत्?
पंचीकरण कैसे होता है?

3.9 एतेषां पंचमहाभूतानां तामसांशस्वरूपम् एकमेकं भूतं द्विधा विभज्य एकमेकम् अर्धं पृथक् व्यवस्थाप्यापरमपरमर्धं चतुर्धा विभज्य स्वार्धमन्येषु अर्धेषु स्वभागचतुष्टयसंयोजनं कार्यम्। तदा पंचीकरणं भवति।
इन पांचों महाभूतो के तमोगुण का अंश दो भाग में विभाजित होकर आधे को छोड़कर बाकी के अर्धभाग के चार भागों में विभाजन होता है, और प्रत्येक का चौथा हिस्सा आधे में मिल जाता है। इस प्रकार पंचीकरण होता है।

3.10 एतेभ्यः पंचीकृतपंचमहाभूतेभ्यः स्थूलशरीरं भवति।
इन पंचीकृत पंचमहाभूतों के द्वारा स्थूलशरीर बनता है।

4. जीव–ब्रह्म का ऐक्य

4.1 एवं पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यं सम्भूतम्।
इस तरह पिण्ड और ब्रह्माण्ड का ऐक्य सिद्ध होता है।

4.2 स्थूलशरीराभिमानि जीवनामकं ब्रह्मप्रतिबिम्बं भवति, स एव जीवः प्रकृत्या स्वस्मात् ईश्वरं भिन्नत्वेन जानाति।
स्थूलशरीर अभिमानी जीव नामक ब्रह्म का प्रतिबिम्ब होता है। वह ही जीव स्वभाव से ही ईश्वर को अपने से भिन्न जानता है।

4.3 अविद्या उपाधिः सन् आत्मा जीवः इति उच्यते।
अविद्या उपाधि से युक्त आत्मा को जीव कहते है।

4.4 मायोपाधिः सन् ईश्वरः इत्युच्यते।
माया उपाधि से युक्त आत्मा को ईश्वर कहते है।

4.5 एवमुपाधिभेदाज्जीवेश्वरभेददृष्टिर्यावत्पर्यन्तं तिष्ठति तावत्पर्यन्तं जन्ममरणादिरूपसंसारो न निवर्तते।
इस प्रकार उपाधिभेद से जीव–ईश्वर में भेद दृष्टि जब तक रहती है, तब तक जन्म–मरणादि रूप संसार की निवृत्ति नही होती।

4.6 तस्मात्कारणात् जीवेश्वरयोर्भेदबुद्धिः न स्वीकार्याः।
इसलिए जीव–ईश्वर में भेदबुद्धि को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

4.7 ननु साहंकारस्य किंचिज्ज्ञस्य जीवस्य निरहंकारस्य सर्वज्ञस्य ईश्वरस्य तत्त्वमसीति महावाक्यात्कथमभेदबुद्धि स्यादुभयोः। विरुद्धधर्माक्रान्तत्वात् इति चेत्।
पूर्वपक्ष– विरुद्ध धर्मवाले होने की वजह से अहंकार से युक्त अल्पज्ञ जीव का निरहंकार, सर्वज्ञ ईश्वर के साथ तत्त्वमसि महावाक्य से कैसे अभेदबुद्धि सम्भव हो सकती है?

4.8 न, स्थूलसूक्ष्मशरीराभिमानी त्वम्पदवाच्यार्थः। उपाधिविनिर्मुक्तं समाधिदशासम्पन्नं शुद्धं चैतन्यं त्वम्पद लक्ष्यार्थः।

सिद्धान्तीः– ऐसा नहीं है! स्थूल, सूक्ष्म शरीर अभिमानी त्वंपद का वाच्यार्थ है। इन उपाधियों से मुक्त समाधिदशा को प्राप्त शुद्ध चैतन्य त्वं पद का लक्ष्यार्थ है।

4.9 एवं सर्वज्ञत्वादिविशिष्ट ईश्वरः तत्पदवाच्यार्थः। उपाधिशून्यं शुद्धचैतन्यं तत्पदलक्ष्यार्थः।

इसी तरह सर्वज्ञत्व आदि विशेषता से युक्त ईश्वर तत् पद का वाच्यार्थ है। उपाधि से रहित शुद्धचैतन्य तत्पद का लक्ष्यार्थ है।

4.10 एवं च जीवेश्वरयोः चैतन्यरूपेणाऽभेदे बाधकाभावः।

और इस तरह जीव और ईश्वर का चैतन्यरूप से अभेद में बाधक का अभाव है।

4.11 एवं च वेदान्तवाक्यैः सद्गुरूपदेशेन च सर्वेष्वपि भूतेषु येषां ब्रह्मबुद्धिरुत्पन्ना ते जीवन्मुक्ता इत्यर्थः।

इस तरह वेदान्तवाक्य के द्वारा सद्गुरु के उपदेश से सर्व भूतों में जिसकी ब्रह्मबुद्धि उत्पन्न है, वो ही जीवन्मुक्त है।

5. जीवन्मुक्तः

5.1 ननु जीवन्मुक्तः कः ?

जीवन्मुक्त किसे कहते है ?

यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहं शूद्रोऽहमस्मीति दृढ़निश्चयः तथा नाहं ब्राह्मणः न शूद्रः न पुरुषः किन्तु असंगः सच्चिदानन्द स्वरूपः प्रकाशरूपः सर्वान्तर्यामी चिदाकाशरूपोऽस्मीति दृढ़निश्चयरूपः अपरोक्षज्ञानवान् जीवन्मुक्तः।

जिस तरह हम देह हैं, हम पुरुष हैं, हम ब्राह्मण हैं, हम शूद्र हैं इस प्रकार का दृढ़ निश्चय होता है, वैसा ही दृढ़ निश्चय हम ब्राह्मण नहीं हैं, शूद्र नहीं हैं, पुरुष नहीं हैं, किन्तु हम असंग, सच्चिदानन्दस्वरूप, प्रकाशरूप, सर्वान्तर्यामी चिदाकाशरूप हैं, इस प्रकार के दृढ़ निश्चयरूप अपरोक्ष ज्ञान से युक्त होता है, वह जीवन्मुक्त है।

5.2 ब्रह्मैवाहमस्मीत्यपरोक्षज्ञानेन निखिलकर्मबन्ध विनिर्मुक्तः स्यात्।

हम ब्रह्म हैं, इस प्रकार के अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा समस्त कर्म के बन्धनों से मुक्त हुआ जाता है।

5.3 कर्माणि कतिविधानि सन्तीति चेत् आगामिसंचित प्रारब्धभेदेन त्रिविधानि सन्ति।

कर्म कितने प्रकार के होते है ? आगामी, संचित और प्रारब्ध रूप तीन प्रकार के कर्म होते है।

5.4 ज्ञानोत्पत्त्यनन्तरं ज्ञानिदेहकृतं पुण्यपापरूपं कर्म यदस्ति तदागामीत्यभिधीयते।

ज्ञान की उत्पत्ति के पश्चात् ज्ञानी के शरीर के द्वारा जो पाप–पुण्यरूप कर्म होते है, वे आगामी कर्म के नाम से जाने जाते है।

5.5 संचित कर्म किम् ?

संचित कर्म किसे कहते है ?

अनन्तकोटिजन्मनां बीजभूतं सत् यत्कर्मजातं पूर्वार्जितं तिष्ठति तत्संचितं ज्ञेयम्।

अनन्त कोटि जन्म में पूर्व में अर्जित किये हुए कर्म के जो बीजरूप से स्थित है, उसें संचित कर्म जानें।

5.6 प्रारब्धं कर्म किमिति चेत्।

प्रारब्ध कर्म किसे कहते है ?

इदं शरीरमुत्पाद्य इह लोके एवं सुखदुःखादिप्रदं यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगेन नष्टं भवति प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षयं इति।

जो इस शरीर को उत्पन्न करके, इस लोक में सुखदुःखादि देने वाले कर्म है, जिसका भोग करने से ही नष्ट होते है। प्रारब्ध कर्म का क्षय भोग से ही होता है।

5.7 संचित कर्म ब्रह्मैवाहमिति निश्चयात्मकज्ञानेन नश्यति।

संचित कर्म 'हम ही ब्रह्म है,' इस प्रकार के निश्चयात्मक ज्ञान से नष्ट होते है।

आगामि कर्म अपि ज्ञानेन नश्यति किंच आगामिकर्मणां नलिनीदलगतजलवत् ज्ञानिनां सम्बन्धो नास्ति।

आगामी कर्म भी ज्ञान से नष्ट होते है। तथा आगामी कर्म के साथ कमल के फूल की पंखूडी पर के जल के समान ज्ञानी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

5.8 किंच ये ज्ञानिनं स्तुवन्ति भजन्ति अर्चयन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतं आगामि पुण्यं गच्छति। ये ज्ञानिनं निन्दन्ति द्विषन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतं सर्वमागामि क्रियमाणं यदवाच्यं कर्म पापात्मकं तद्गच्छति।

इसके अलावा जो ज्ञानवान की स्तुति करता है, सेवा करता है, अर्चना करता है, उनके प्रति ज्ञानवान के द्वारा किये हुए आगामी कर्म के पुण्य जाते है। जो ज्ञानी की निन्दा करता है, द्वेष करता है, उसके प्रति ज्ञानी के द्वारा हुए उन समस्त आगामी–क्रियमाण कर्म का फल जाता है, जो पापरूप अवाच्य होते है।

5.9 तथा च आत्मवित्संसारं तीर्त्वा ब्रह्मानन्दमिहैव प्राप्नोति।
'तरति शोकम् आत्मवित्' इति श्रुतेः।।

इस प्रकार आत्मज्ञानी संसार से परे जाकर ब्रह्मानन्द को यहां पर ही प्राप्त करता है। 'आत्मवित् शोक को पार कर जाता है' यह श्रुति प्रमाण भी है।

5.10 ''तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा।
ज्ञानसम्प्राप्तिसमये मुक्तोऽसौ विगताशयः।।'' इति स्मृतेश्च।

''ज्ञान प्राप्त होने के उपरान्त अपने शरीर को काशी में त्यागे अथवा चाण्डाल के घर में त्यागें तो भी वह मुक्ति को ही प्राप्त है, उसमें कोई संशय नहीं है।'' यह स्मृति भी है।